

**प्रेम पुं.** (तत्.) 1. प्रीति, आत्मीयता, अनुराग, दयालुता, सहज सम्मान, खुशी, प्रसन्नता, हर्ष, प्रीति, प्रणय, आसक्ति 2. किसी के प्रति होने वाला लगाव, कोमल अनुभूति, स्नेह, प्यार, मोहब्बत 3. मानसिक लगाव, मोह वि. प्यारा, सुहाना मुहा. प्रेम उपजना- प्यार होना या अनुकूल भाव आना; प्रेम का प्यासा होना- प्रेम के लिए व्याकुल होना; प्रेम का दिया जलाना- प्यार में खुशी मनाना; प्रेम की डोर से बाँधना या बाँधना- प्यार के वश में करना या होना; प्रेम जोड़ना- प्रेम में जुड़ जाना; प्रेम तोड़ना- प्रेम का रिश्ता न रखना, अपनापन छोड़ देना, संबंध तोड़ देना; प्रेम में पगना- प्रेम में मग्न हो जाना।

**प्रेम कलह पुं.** (तत्.) प्रेम में होने वाला कलह या झगड़ा, पति-पत्नी या स्त्री पुरुष का प्रेम में किया जाने वाला झगड़ा।

**प्रेम कला स्त्री.** (तत्.) 1. प्रेम करने की कला या विधि-प्रेम करने का तरीका, शिव की मूलशक्ति जिससे सृष्टि का विकास होता है।

**प्रेमकाव्य पुं.** (तत्.) 1. ऐसा काव्य जिसमें प्रेम का आख्यान हो या समावेश हो 2. प्रेमपूर्ण या प्रेमपरक रचना 3. प्रेमपूर्ण रचनाओं का समूह 4. सूफियो द्वारा रचित प्रेमाख्यानक काव्य को प्रेम-काव्य कहते हैं।

**प्रेमगर्विता वि.** (तत्.) 1. प्रेम की प्रगाढ़ता पर गर्व करने वाली स्त्री 2. जो प्रिय के प्रेम पर गर्व करती हो, ऐसी नायिका 3. अपनी सुंदरता पर गर्व करने वाली नायिका 'रूपगर्विता' के नाम से गर्विता नायिका की एक भेद मानी जाती है।

**प्रेमगीत पुं.** (तत्.) समा. प्रेम का गीत, प्रेम के अवसर पर गाया जाने वाला गीत, प्रीति या प्यार का गीत।

**प्रेमजल पुं.** (तत्.) प्रेम के अंतर्गत, प्रसन्नता में बहने वाले आँसू, आत्मीयता के भाव में टपकने वाले आँसू, खुशी के आँसू, भाव-विभोर होने की दशा में बहने वाले आँसू।

**प्रेमपथ पुं.** (तत्.) 1. प्रेम का रास्ता 2. प्रेम करने में आने वाली बाधाओं को झेलकर आनंद

अनुभव करते रहने की जीवन-पद्धति 3. निष्ठापूर्वक प्रेम करने की रीति।

**प्रेमपात्र पुं.** (तत्.) प्रेम का पात्र, प्रेम का भाजन, प्रेम के योग्य, जिस व्यक्ति के प्रति प्रेम हो, प्रेमी, प्यारा, प्रिय।

**प्रेमपाश पुं.** (तत्.) प्रीति का जाल, प्रीति का बंधन, अनुराग का बंधन, हृदयालिंगन।

**प्रेमपुत्तलिका स्त्री.** (तत्.) 1. प्रेम की पुतली, प्रेम में पगी नारी 2. प्रेमवती पत्नी या नायिका।

**प्रेमपुलक पुं.** (तत्.) 1. प्रेम का रोमांच, प्रेमावेश में होने वाला रोमांच 2. अतिशय प्रेमवश प्रसन्नता का भाव।

**प्रेमबंध पुं.** (तत्.) प्यार का बंधन, प्रेम का जाल।

**प्रेमरस पुं.** (तत्.) 1. प्यार का आनंददायी रस या भाव 2. अपने प्रेमी या प्रेमिका के चिंतन को आनंद मग्न व्यक्ति का सुख टि. प्रेमरस के कारण भक्ति और वात्सल्य रस की भी उत्पत्ति होती है।

**प्रेमलक्षण स्त्री.** (तत्.) प्रेम की प्रधानता वाली स्थिति जिसमें ज्ञान तथा अन्य विधियों की प्रधानता हो और केवल प्रेम ही प्रेम हो।

**प्रेमलक्षणा भक्ति स्त्री.** (तत्.) जिसमें प्रेम की प्रधानता हो वैसी भक्ति टि. वल्लभाचार्य ने प्रेमलक्षणा भक्ति को प्रधानता दी जो वस्तुतः कृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम में दृष्टिगोचर थी।

**प्रेमवंत वि.** (तत्.) प्रेमवाला, जिसमें प्रेम हो, प्रीतिवाला।

**प्रेमविलास पुं.** (तत्.) मनो. प्रेम का विलास, प्रेम का हाव भाव, प्रेम प्रदर्शन, प्रेम का खिलवाड़, प्रेम क्रीड़ा, इश्कबाजी, प्रेम-प्रदर्शन।

**प्रेमवीर पुं.** (तत्.) अधिक प्रेम में निकलने वाले आँसू, प्रीति के आँसू।

**प्रेमाक्षेप पुं.** (तत्.) प्रेम का आक्षेप या दोष, प्रेम की कटूक्ति या व्यंग्य, प्रेम में ताना।

**प्रेमाख्यान पुं.** (तत्.) 1. प्रेम का आख्यान, प्रेम कहानी, प्रेमकथा 2. प्रेम कहानी पर आधारित काव्य, प्रेमाख्यान काव्य 3. सूफी काव्य।